ॐ श्री सत्नाम साक्षी

सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं उनके जीवन से जुड़े कुछ मार्मिक

पावन प्रसंग

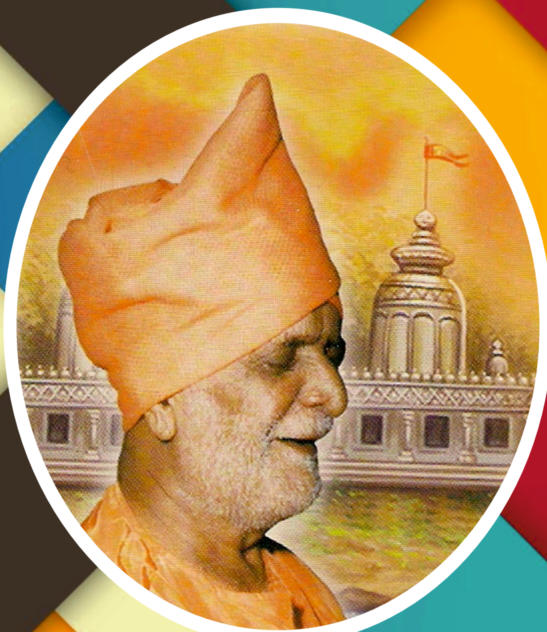

संकलन / संपादक

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं उनके जीवन से जुड़े कुछ मार्मिक

पावन प्रसंग

संकलन / संपादक

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)

ॐ सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के तृतीय पीठाधीश्वर
प्रेमावतार सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज जी

संक्षिप्त जीवन परिचय

सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का जन्म श्रावण मास की पूर्णमासी, रक्षाबंधन, मंगलवार , सन् १६०७ में सिन्ध के पवित्र गाँव '**चक नगरी**' में हुआ था !

स्वामी जी के पिता श्री का नाम '**श्री आसूदाराम**' और माता श्री का नाम '**जुगलबाई**' था ! दोनों बड़े धार्मिक व संत सेवी थे !

स्वामी जी का बाल्यकाल का नाम '**खेराज**' था ! जो युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने शिक्षा-दीक्षा के पश्चात् '**शान्तिप्रकाश**' रखा !

स्वामी जी बचपन से ही बहुत मेधावी थे ! वे हर आध्यात्मिक बात को बड़े ध्यान से सुनते थे और जल्दी ही समझ लेते थे !

स्वामी जी तीसरी कक्षा स्कूल की पास करने के पश्चात् ११ वर्ष की आयु में उन्हें बड़ी माता चेचक निकली ! जिसके कारण उनकी आँखों की ज्योति चली गई ! किन्तु अंदर की ज्योत जाग्रत हो गयी !

स्वामी जी के घर वालें उनकों लेकर सिंध के 'सिद्ध संत सांई

हरचूराम जी साहिब' के पास ले गए ! स्वामी जी को देखकर उन्होंने कहा- बालक तो बड़ा संत होगा ! सारे जग में नाम रोशन करेगा ! संतों का वचन सत्य हुआ !

स्वामी जी १२ वर्ष के हुए ! तब **'महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** मण्डली सहित **'चक नगरी'** पधारें ! तब सद्गुरु और शिष्य का आत्मीय मिलन हुआ !

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज (टण्डाआदम) में स्वामी जी को अपने साथ आश्रम पर लेकर आये और **'श्री गुरु दरबार'** व संतो की सेवा में लगा दिया ! उनकी सेवा से प्रसन्न होकर कुछ समय पश्चात् **'श्री गुरुदेव भगवान'** ने नाम-दान की दीक्षा प्रदान की!

स्वामी जी **'श्री गुरु आश्रम'** की सेवा बड़े श्रद्धा प्रेम भाव से किया करते थे ! भंडारे में बर्तन साफ करना, झाड़ू लगाना व संतों आदि की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे !

सद्गुरु महाराज जी की आज्ञा पाकर स्वामी जी ने प्रारम्भिक विधा अध्ययन के लिए हैदराबाद (सिंध) में ऋषि दयाराम गिदूमल संस्कृत विद्यालय में संस्कृत भाषा का अध्ययन किया !

स्वामी जी ने समस्त शास्त्रों के अध्ययन हेतु हरिद्वार चेतन देव की कुटिया (कनखल) में स्वामी शंकरानन्द भारती एवं महंत श्री गुरूमुख दास जी से वेदान्त, विचार माला, विचार चन्द्रोदय, विचार सागर, वृत्ति प्रभाकर, रत्नावली, तत्व अनुसंधान एवं और भी कई वेद वेदान्त तत्व ज्ञान सम्बन्धी ग्रन्थों का अध्ययन किया !

स्वामी जी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के गूढ़ अर्थों को समझने के लिए कुछ समय अमृतसर भी गये ! वहाँ उन्होंने कर्मसिंह का कटरा स्थान पर ज्ञानी हमीरसिंह जी के मार्गदर्शन में **'श्री गुरुग्रन्थ साहिब'** का गहन अध्ययन किया !

स्वामी जी को सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के पश्चात् सभी संतो ने सन् १९७७ में 'श्री प्रेम प्रकाश मण्डल' की गुरु गाद्दी पर विराजमान किया हैं !

स्वामी जी ने १९७७ से १९९२ तक श्री प्रेम प्रकाश मंडल की बागडोर को बड़े सुचारू रूप से संभाला और 'श्री गुरुदेव' की यश कीर्ति को चहुँ ओर फैलाया !

स्वामी जी **'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** के आज्ञानुसार ही कार्य करते थे और फिर सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज में **'आचार्य श्री'** वाला भाव रखकर उनकी आज्ञानुसार कार्य किया करते थे ! वे दो नहीं एक ही हैं ! ऐसा स्वामी जी का भाव होता था !

देश विभाजन के पश्चात् स्वामी जी कल्याण कैम्प में आए और वहाँ सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की आज्ञानुसार ही सब कार्य करते रहे !

स्वामी जी ने प्रेमियों एवं संतों को ऐसा प्रेम-प्यार दिया ! जो सभी के हृदय में अमिट छाप छोड़ गया !

स्वामी जी मांस-मदिरा का परित्याग करने के लिए प्रेरित करते थे ! मांस मानवीय आहार नहीं हैं ! ये पशु-पक्षी प्रभु-परमात्मा

की मूक संतान हैं ! इन पर दया करने से प्रभु प्रसन्न होते हैं ! अतः मास–मदिरा का सेवन नहीं करना चाहिए !

स्वामी जी करुणा एवं प्रेम की मूर्ति थे ! वे न केवल मानव मात्र को प्रेम करते थे ! परन्तु पशु–पक्षियों से भी स्नेह- प्रेम- प्यार किया करते थे !

स्वामी जी का संतों से विशेष प्रेम व लगाव था ! जहाँ पर भी संतों के आगमन का समाचार मिलता तो उनके दर्शन करने व मिलने अवश्य ही जाते थे !

स्वामी जी अनेक संत–महापुरुषों को बड़े ही प्रेम भाव से **'श्री गुरु दरबार'** पर रहने का आग्रह करते थे और बहुत प्रेम से उनकी सेवा करते और प्रेमियों से करवाते थे !

स्वामी जी का **'श्री गुरु दरबार–श्री अमरापुर स्थान'** जयपुर से विशेष प्रेम व लगाव था ! वृध्दावस्था में भी **'समाधि–स्थल'** जो की गर्भगृह में हैं ! वहाँ मथा टेकने अवश्य जाते थे !

स्वामी जी अक्सर कहते थे- मैं 'प्रज्ञाचक्षु' हूँ ! मेरे उपर तो **'मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** की अपार कृपा हैं ! जो मुझे इस लायक बनाया !

किसी काम के थे नहीं, छुता नहीं को छाँव ।

कृपा भयी गुरुदेव की, तो पूजन लागे पाँव ।।

स्वामी जी मर्यादा की प्रतिमूर्ति थे ! सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज में अगाध श्रद्धा व प्रेम था ! जब वे आश्रम में पधारते

थे तो उनकी बहुत सेवा-शुश्रुता किया करते थे ! उनकी सेवा से **'महाराज जी'** बहुत प्रसन्न होते थे !

स्वामी जी **'श्री गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** के साथ-साथ **'श्री कृष्ण भगवान'** के उपासक भी थे ! श्री कृष्ण भगवान से अत्यधिक प्रेम था ! उन्होंने भगवान कृष्ण की महिमा के अनेक भजनों की रचना भी की !

स्वामी जी **'एकादशी व्रत'** पर बहुत जोर देते थे ! स्वयं व्रत रखते थे और सभी से रखवाते थे ! देश-विदेश में एकादशी व्रत का बहुत प्रचार किया !

स्वामी जी ने समाज में फैली विषमता दहेज प्रथा, फैशन, जुआ, शराब, नशीले पदार्थ आदि समाजिक बुराईयों के विरुद्ध यत्र-तत्र प्रचार किया करते थे और बन्द कराने का अथक प्रयास किया !

स्वामी जी सच्चे **'गौ भक्त'** व सेवक थे ! वे गौ सेवा के लिए सबको प्रेरित करते थे ! उल्लास नगर में स्थित 'श्री प्रेम प्रकाश आश्रम' में **'राधेश्याम गौशाला'** का निर्माण करवाया ! आज भी वहाँ हजारों गौ माताओं की सेवा होती हैं !

स्वामी जी अपनी लीला संवरण कर १५ अगस्त १९९२ को पंचभौतिक शरीर का त्याग कर 'श्री गुरु चरणों' में लीन हो गये !

प्रेमावतार गुरु भक्त सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज के 'श्री चरणों' मे शत् - शत् नमन व कोटि - कोटि वन्दन.....!

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

प्रेम पुंज

सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज

सृष्टि विकास के लिये होता है महापुरुषों का अवतरण ! एक विकास बाहरी, जो भौतिक संसाधनों द्वारा पूरा होता है और दूसरा व्यक्ति के आन्तरिक चेतना का विकास ! वह भौतिक संसाधनों से नहीं अपितु आध्यात्मिक स्त्रोतों से ही संभव होता है ! ऐसे आध्यात्मिक, धार्मिक स्त्रोत संत-महात्माओं द्वारा ही विकसित होते हैं ! जिसके माध्यम से जिज्ञासु उस परम रस का आस्वादन करके अपने जीवन को आनन्दमय व भक्ति से परिपूर्ण कर देता है !

सन्त-महापुरुषों का जीवन स्वयं के लिये नहीं अपितु मानवता की भलाई व निःस्वार्थ सेवा के लिये होता है ! संत तो स्वयं परमात्मा के ही अंश होते हैं ! जो समय-समय पर इस पवित्र धरा धाम पर अवतार लेते हैं और जीवों का कल्याण करते हैं !

महापुरुष अपने सुखों की तिलांजलि देकर समस्त संसार के जीव मात्र के कल्याण में सदैव तत्पर रहते हैं ! साथ ही इस धर्मप्राण भारतवर्ष में भक्ति, प्रेम, ज्ञान व शान्ति का प्रकाश फैलाते हैं !

ऐसे महापुरुषों की श्रेणी में हमारे **परम पूज्य सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज** का स्थान वन्दनीय है !

नाम ही के अनुरूप शान्ति प्रकाश ! जो सदैव भक्तों के हृदय

में शान्ति का प्रकाश फैलाते हैं, सबको शान्ति का पाठ पढ़ाते हैं ! जिनका नाम लेने व दर्शन मात्र से संतप्त हृदय को सहज ही परम शान्ति की प्राप्ति होती है !

ऐसी ही प्रभु सत्ता की महान विभूति परम तपस्वी महावैरागी सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ! जिनके परम शिष्य थे महान कर्मयोगी सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ! जिनका जन्म श्रावण मास सन् १६०७ नारियल पूर्णिमा (श्री सत्यनारायण), रक्षा बन्धन के पवित्र दिन सिन्ध के सक्खर जिले के चक गांव में हुआ ! आपके पिता का नाम श्री आसूदोमल एवं माता का नाम श्रीमती जुगलबाई था ! दोनों बड़े संतोषी व संत सेवाभावी थे ! जिसका प्रभाव **'महाराजश्री'** के जीवन पर पड़ा !

मैत्री करुणा मुदिता, त्याग तपस्या रूप।
सतगुरु शान्तिप्रकाश जी, संत शिरोमणि अनूप।।

महाराजश्री का मन बाल्यावस्था में ही संसार से उपराम होकर परमात्म चिन्तन में स्थित हो गया ! वे सदैव प्रभु भक्ति में तल्लीन रहते थे ! समय के साथ महाराजश्री की प्रारम्भिक शिक्षा पाठशाला से शुरू हुई ! किन्तु अचानक चेचक नामक बीमारी से उनके बाह्य चक्षुओं की ज्योति जाती रही ! अनेक उपाय करने पर भी पुनः ज्योति वापस न आ सकी ! तब माता-पिता उन्हें सिन्ध के प्रसिद्ध थल्हे वाले संत श्री साईं हरचूराम साहिब की शरण में ले आए ! संतश्री ने कहा- चिन्ता की कोई बात नहीं ! यह बड़ा महान संत बनेगा ! संतश्री की वाणी सार्थक हुई !

समय पाकर महाराजश्री को **भगवद् स्वरूप अवतारी महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** का दर्शन हुआ ! कुछ समय तक आचार्यश्री का पावन सानिध्य, दर्शन व सत्संग, सेवा व सुमरण का लाभ प्राप्त हुआ ! महाराजश्री की निष्ठा, सेवा, स्मरण, एकाग्रता को देखकर पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने मंत्रदीक्षा देकर उन्हें अपना शिष्य स्वीकार किया !

आचार्यश्री की आज्ञा शिरोधार्य कर स्वामीजी **श्री अमरापुर दरबार (डिब)** पर पूर्ण श्रद्धाभाव, उत्साह, निष्ठा के साथ सेवा स्मरण में सदैव संलग्न रहते थे !

कुछ समय पश्चात् आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से आज्ञा लेकर संस्कृत भाषा, गुरुवाणी, रामायण इत्यादि सत्शास्त्रों के अध्ययन हेतु अमृतसर, हरिद्वार, काशी आदि स्थानों पर जाकर शिक्षा ग्रहण की !

आध्यात्मिक चिन्तन-मनन के पश्चात् गुरु का संदेश जन-जन तक पहुँचाया ! पूरे विश्व में भ्रमण कर अपने ज्ञान द्वारा हजारों भक्तों को शान्ति व प्रेम का पाठ पढ़ाया ! आचार्यश्री की आज्ञानुसार निष्काम सेवा कार्य में भी तत्पर रहकर मानव सेवा, समाज सेवा, मूक प्राणी अर्थात् जीवमात्र की सेवा करके अपने गुरु के यश कीर्ति को उज्जवल बनाया ! आपने मृदुता, शीलता, शान्त सरल स्वभाव से सबको अपना बना लिया ! कहते हैं ऐसे महापुरुषों के अवतार लेने से विश्व वसुन्धरा भी कृतार्थ हो जाती है !

महायोगी आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के

परम शिष्य गो-पालक, श्रीकृष्ण स्वरूप, परोपकारी, कर्मयोगी **'सद्‌गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज'** के प्राद्रुर्भाव पर समस्त विश्व की धरा वन्दनीय बन जाती है ! जिनके दर्शन मात्र से हृदय में प्रेम, भक्ति, ज्ञान की अलख स्वयं जाग्रत हो जाती है !

आप गुरु में पूर्ण आस्था व विश्वास रखते थे ! गुरु को भगवान व इष्ट मानते थे ! आप सदैव अपनी वाणी में कहते थे कि **श्री गुरुदेव सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज** व **सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज** साक्षात् रूप में आज हर समय हमारे साथ हैं ! वे हमारी रक्षा करते हैं ! प्रेरणा पुंज बनकर हमारे घट-घट में निवास करते हैं! उनके आशीर्वाद ने ही इस 'सूर श्याम दास' को इस लायक बनाया !

किसी काम के थे नहीं- छूता नहीं कोई छाँव।
कृपा भई गुरुदेव की- तो पूजन लागे पाँव।।

आप जब भी किसी बड़े संत-महापुरुषों से मिलते थे तो सदैव सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का ही परिचय देते थे ! बड़ी बड़ी सत्संग सभाओं में एक बात बड़े ही डंके की चोट पर मर्मस्पर्शी स्वर में विनयपूर्वक कहते थे मेरे जैसे सूरदास का क्या मूल्य? 'यह तो सब कृपा हमारे **महायोगी आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** की है, जिसे इतना लायक बनाया !' ऐसी विनयशीलता थी आपकी सद्‌गुरु टेऊँरामजी महाराज के प्रति ! इन्हीं सद्‌गुणों के कारण आप ध्रुव तारे के समान सदैव वन्दनीय व पूजनीय बन गये !

समय की गति और समुद्र की लहरों को कोई रोक नहीं सकता ! ऐसे में मृत्युलोक का सभी को परित्याग करना पड़ता है ! आपने अपनी जीवन लीला का संवरण १५ अगस्त १९९२ को वायु मण्डल में कर श्री अमरापुर धाम ब्रह्मलोक प्रस्थान किया ! आपकी ज्योति महाज्योति में समा गयी ! बहु प्रतिभाओं से विभूषित आपका अलौकिक जीवन हमारे लिये सदैव प्रेरणा व प्रकाश का पुंज बना रहेगा !

सेवा कर्मणि संलग्नं, परे ब्रह्मणि संस्थितम् ।
श्री स्वामी शांति प्रकाशं, सद्गुरुं नित्य नमामि ।।

परम प्रेम के पुंज है,
परम मनोहर रुप ।
सद्गुरु शांतिप्रकाश जी,
माधुरी मधुर स्वरुप ।।

एकादशी व्रत के प्रति निष्ठा

हमारा भारत धर्मपरायण है ! इसमें कर्म की प्रधानता है ! किया हुआ शुभ कर्म कभी व्यर्थ नही जाता ! समय पर फलीभूत अवश्य ही होता है ! अतः सभी को व्रत नेम अनुष्ठान जरूर करने चाहिए ! महापुरुष स्वयं तो करते ही है ओरो से भी सरकर्म करवाकर उनका कल्याण करते है !

ऐसे ही कर्मयोगी सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज को एकादशी का व्रत बहुत ही प्यारा था ! स्वयं आत्म तत्व में स्थित होने के बावजूद भी वह स्वयं एकादशी का व्रत नियम से रखते थे ! यहाँ तक कि- मेलों में भी हजारों भक्तों को एकादशी व्रत महिमा बताकर सभी से व्रत रखवाते थे !

एक बार सद्गुरु शान्ति प्रकाश जी महाराज विदेश लंदन की यात्रा पर गए थे ! वहाँ पर सत्संग के माध्यम से **'एकादशी व्रत'** की प्रेरणा दी !

वहाँ संत अनन्त प्रकाश जी ने पूछा कि- स्वामी जी ! आप एकादशी का व्रत क्यों रखते हैं..? आप तो सभी कर्मों से ऊपर उठे हुए हैं..?

तब स्वामी जी ने कहा- सभी को प्रेरणा देने के लिए रखते है ! हम करेंगे तो दूसरे भी करेंगे ! अब आप ही बताओ..? यदि मैं

यहाँ लंदन में एकादशी का व्रत नहीं रखता, तो ये लंदन वासी एकादशी का उपवास कैसे करते..? इन्हें क्या पता एकादशी का कितना महात्म्य है ! संत - महात्माओं को लोक कल्याण के लिए परमात्मा में स्थित होते हुए भी सत्कर्म करना चाहिए ! व्रत अनुष्ठान करने चाहिए ! जैसे श्री कृष्ण भगवान ने गीता में अर्जुन को कहा- **''योगस्थः कुरू कर्माणि !''**

शुभ कर्म सभी को करने चाहिए ! अपने लिए नही करे पर दूसरे की लिए जरूर करें ! एकादशी व्रत रखने का बड़ा फल मिलता है ! स्वामी जी अक्सर भक्त नामदेव जी का प्रसंग सुनाते थे और कहते थे कि- **''एकादशी जो व्रत राखे- काहे को तीर्थ जाई !''**

जो पूर्ण श्रद्धा भाव से एकादशी का व्रत रखता है ! उसे तीर्थ जाने की आवश्यकता नही ! उसे इस व्रत के रखने से ही सब फल मिल जाते है ! स्वामी जी एकादशी की बहुत महिमा गाते थे ! उनकी प्रेरणा से ही सैकड़ों लोग व्रत रखते थे !

ऐसे थे- एकादशी व्रत के परम उपासक सद्‌गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज !

शत-शत नमन..! कोटि- कोटि वन्दन...

शेरो के बेटे शेर ही होते है

एक बार सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज - श्री स्वामी गंगेश्वरानंद जी महाराज से मिलने के लिए गये ! स्वामी गंगेश्वरानंद जी महाराज, स्वामी जी से कहने लगे- महाराज शान्तिप्रकाश जी ! हमने सुना है कि अब आपके घुटनों में दर्द रहता है ! स्वामी जी ने कहा- जी ! दर्द तो रहता हैं ! स्वामी गंगेश्वरानंद जी महाराज कहने लगे कि - अब आप आराम करो ! आप व्रद्ध हो गए हो ! यात्रा व घूमना-फिरना बंद करो ! आश्रम पर ही भजन सुमरण करो ! तब स्वामी जी ने मुस्कराते हुए कहा कि- महाराज जी ! आपने हमारे योगिराज सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दर्शन किये थे..? स्वामी गंगेश्वरानंद जी महाराज कहने लगे- हाँ-हाँ ! अनेक बार दर्शन किये ! वह तो एकदम शेर मर्द लगते थे ! तब स्वामी जी कहने लगे कि- तो आप ही बताओ..? शेरों की औलाद भी शेर होती हैं ! स्वामी जी का ऐसा भाव सुनकर दोनों महापुरुष मंद मंद मुस्कराने लगे ! आप हमारे आदरणीय हैं ! आप तो हमें ऐसी आज्ञा दीजिए कि- जीवन पर्यन्त प्राणीमात्र की सेवा करते रहें ! जब तक शरीर मे जान है ! तब तक गुरु की सेवा - सत्संग - सुमरण करते रहे !

ऐसा उत्तर सुनकर स्वामी गंगेश्वरानंद जी महाराज, स्वामी जी से बहुत प्रसन्न हुए ! आपस मे दोनों महापुरुष गले मिले ! एक दूसरे का अभिवादन किया और बड़ा आंनद हुआ ! वैसे भी संतो से स्वामी जी का विशेष लगाव व प्रेमभाव था !

ऐसे थे- श्री गुरुदेव की यश कीर्ति को उज्चवल व धवल बनाने वाले सद्‌गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज !

शत् - शत् नमन ..... ! कोटि कोटि वन्दन ! .....

संत - संत के प्राण है, संत - संत पर ध्यान !

सबके प्यारे संत है, करते सबका मान ! !

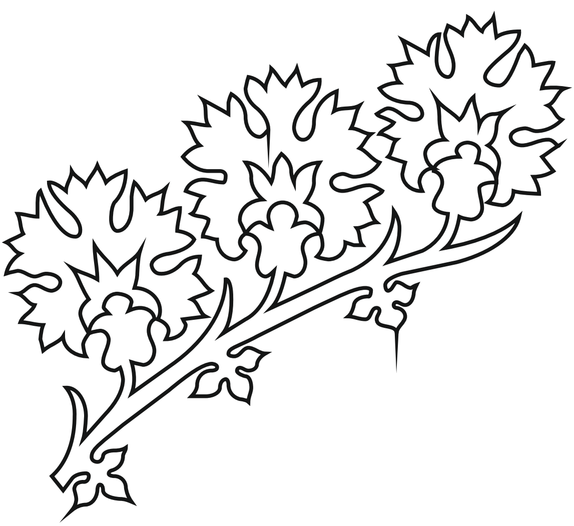

गुणीजनों के प्रति आदर सन्मान

एक समय की बात हैं ! सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज जलगाँव में पधारे हुए थे ! स्वामी जी कार में किसी स्थान से सत्संग करके लौट रहे थे !

इसी बीच पंडित जगन्नाथ पहाड़ी के शिष्य श्रीनिवास जी एक स्थान पर भजन भाव कर रहे थे ! स्वामी जी ने जैसे ही श्रवण किया और कहा - कार को रोको ! स्वामी जी उनके स्वर से ही पहचान गए कि - श्रीनिवास जी भजन कर रहे हैं !

स्वामी जी अपनी प्रभु-परमात्मा की बंदगी की मौज में थे ! वे सभी का सन्मान करते थे ! उस समय स्वामी जी के साथ कुछ संत और प्रेमी भी थे ! स्वामी जी ने आज्ञा दी ! चलो -चलकर गुणीजन को खर्ची (भेंट) देकर आयें ! सभी संत एवं प्रेमी आश्चर्य करने लगे इतने बड़े महापुरुष स्वयं चलकर, संतों को खर्ची देने जा रहे हैं ! हमे ही आज्ञा कर देते !

स्वामी जी की आज्ञा पाकर २-३ जने साथ गए ! स्वामी जी जब स्वयं पंडित श्रीनिवास को खर्ची देने के लिए जा रहे थे ! तब पंडित श्रीनिवास जी गद्-गद् हो गये ! उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था ! इतने बड़े महामण्डलेश्वर स्वयं उनके पास आ रहे रहे है ! स्वामी जी को देखकर पंडित श्रीनिवास जी कहने लगे- देखो-देखो ! **''आज कुँआ स्वयं चलकर के प्यासे के पास आ रहा है !''**

भरी सभा में सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज की सभी जय- जयकार करने लगे !

पंडित श्रीनिवास जी ने स्वामी जी को ह्रदय से प्रणाम किया और उनका स्वागत-सत्कार किया ! स्वामी जी ने पंडित श्रीनिवास जी को प्रेम से खर्ची दी ! पंडित श्रीनिवास जी बड़े आनंदित होने लगे और कहने लगे - आज मेरा भाग्योदय हुआ है ! जो आपके दर्शन व आशीर्वाद मिल रहा है ! स्वामी जी ने भी उन्हें प्रेम पूर्वक सन्मान दिया !

ऐसे थे निर्मानी सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज ! जो हमेशा छोटे-बड़े, ऊंच- नीच सभी को अपना प्रेम व स्नेह प्रदान किया करते थे !

महापुरुषों के श्री चरणों में शत्-शत् नमन ! कोटि-कोटि वन्दन !

सद्गुरु शांतिप्रकाश की,
बड़ी अलोखी बात ।
सरल सरस सुखरुप है,
मधुर मधुर मुस्कात ।।

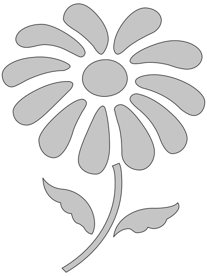

हम भी आपके घर के सदस्य है

एक बार प्रेममूर्ति सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज जयपुर में एक प्रेमी के घर पधारें थे ! वह प्रेमी स्वामी जी को कहने लगा कि - स्वामी जी ! एक बात कहूँ अगर आपकी आज्ञा हो तो ? स्वामी जी ने कहा- बेटा ! बेशक कहो ! वह प्रेमी कहने लगा - स्वामी जी ! हम घर में ४० सदस्य हैं ! आपकी दया दृष्टि ऐसी हैं कि - हम सभी एक साथ रहते है और भोजन भी एक साथ मिलकर ही खाते हैं ! हमारी रसोई घर भी एक ही हैं !

इतना सुनकर स्वामी जी बहुत प्रसन्नचित्त हुए और कहने लगे-प्यारे ! आपके प्रेम की बात सुनकर हम बहुत प्रसन्न हुए हैं ! आज के जमाने बड़े-बड़े घर-परिवार (संयुक्त परिवार) कहाँ देखने को मिलते हैं..? आप पर गुरुदेव व प्रभु-परमात्मा की असीम कृपा हैं ! जो सब मिल-जुलकर रहते हैं ! **एकता में संगठन व शक्ति होती है ! प्रेम प्यार बढ़ता है !** दुःख सुख में एक दूसरे के काम आते है !

अब आगे से कोई आपसे पूछे कि- आपके घर में कितने सदस्य हैं..? तो **बोलना हमारे परिवार में 41 सदस्य हैं !**

प्रेमी आश्चर्य से पूछने लगा- स्वामी जी ! ४१ सदस्य..

कैसे.. ? स्वामी जी मुस्कराकर कहने लगे कि – **बेटा राजू ! 40 आप लोग और 41 वाँ मैं !**

आज से मैं भी आपके घर का ही सदस्य हूँ ! सदैव आपके साथ ही निवास करूँगा ! इतना सुनकर वह प्रेमी बड़ा गद्-गद् हुआ!

ऐसे थे- प्रेमामूर्ति सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज ! जिनकी मृदुल वाणी हर किसी को अपनेपन का अहसास करवाती थी !

ऐसे महापुरुषों के चरणों में शत्-शत् नमन ! कोटि-कोटि वन्दन !

श्री गुरुदेव महिमा का गुणगान

एक बार सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का जन्मदिन ग्वालियर शहर में मना रहे थे ! उनकी उपस्थिति में प्रेमीजन आनन्द-उमंग-उत्साह से भजन व गीत गा थे ! सभी प्रेमी खुशी में झूम रहे थे, वो घड़ी याद करने से हृदय में आनंद की लहर छा जाती हैं ! लेकिन **'महाराज जी'** का चित्त तो अपने प्यारे **'श्री गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** में ही लगा हुआ था ! उनका स्मरण कर रहे थे ! संतो को आज्ञा दी कि आज सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की महिमा का ही गुणगान करें! प्रेमियों ने कहा - प्रभु ! आज तो आपका पावन जन्म दिवस हैं ! आज तो हम आप की ही महिमा का यशोगान करेंगे !

महाराज श्री ने फरमाया कि- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की महिमा का गान करने से सबकी महिमा का गान हो जाता हैं ! मूल (जड़) के सींचने से टहनियों को एवं पत्तों को अपने आप ही जल मिल जाता है !

सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज हमारे मूल हैं ! हमारे आधार स्तम्भ है ! हम सब तो उनकी टहनियाँ हैं ! उनकी कृपा से ही हम सब इस लायक बने है ! नही तो हमें कौन पूछता...?

तेरी कृपा के बिना, हे प्रभू मंगल मूल !

उनकी कृपा प्रसाद का हम सब आनन्द ले रहे है ! आज हम सब **'श्री गुरुदेव जी'** की अधिक से अधिक महिमा गाएं ! जिससे हम सबको **'श्री गुरूदेव जी'** का भरपूर आशीर्वाद प्राप्त हो सके ! जिससे हम सबका कल्याण हो सके !

ऐसे थे - युगपुरुष युगद्रष्टा सद्‍गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम शिष्य व गुरु भक्त एवं उपासक स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज !

शत शत नमन... कोटि कोटि वन्दन...

तुम भी धोबी-हम भी धोबी

इक ही प्रेम प्रभु को भाया,
जाति वर्ण कुल कर्म ना देखा
प्रेम के हाथ बिकाया !!

एक बार प्रेममूर्ति सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज वृंदावन धाम में विराजमान थे ! वहाँ मुरैना का एक गरीब बालक जिसका नाम गिर्राज था ! स्वामी जी के प्रेम व करुणा को वह बालक बार बार देख रहा था ! उस गरीब बेचारे के मन में आया कि - 'श्री गुरु महाराज जी' मुझसे भी प्रेम करें और गले लगाएं ! किन्तु निम्न जाति (धोबी) होने के कारण संकुचा बना था। कोई कुछ बोल न दें। इसलिये कर रहा था !

उस गरीब बालक का आन्तरिक भाव, अन्तर्यामी स्वामी जी समझ गये और उसे पास बुलाकर गले से लगाया ! अत्यधिक स्नेह-प्रेम दिया ! स्वामी जी ने उससे पूछा - बेटा ! तेरा नाम क्या है...? बालक बोला- महाराज जी ! गिर्राज !

स्वामी जी ने पूछा- क्या काम करते हो बेटा..? वह बालक निम्न जाति होने के कारण थोड़ा निराशा व संकोच से बोला- मैं धोबी हूँ !

स्वामी जी बोले- अरे बेटा ! तू निराश क्यूँ होता है..? घबरा नहीं ! हम दोनों ही धोबी हैं ! **तू भी धोबी और मैं भी धोबी !**

यह सुनकर वह गरीब बालक आश्चर्य में पड़ गया- महाराज जी ! यह आप क्या कह रहे हैं..? आप तो महापुरुष एवं महामण्डलेश्वर हैं ! अपनी तुलना मुझ गरीब धोबी से कर रहे हैं! स्वामी जी ने बड़े प्रेम से कहा- बेटा ! हम संत भी धोबी ही हैं! हम भी धोबी वाला ही काम करते हैं ! अंतर सिर्फ इतना हैं कि - **तुम लोगों के कपड़े धोते हो** और **हम लोगों के मलीन मन को धोते हैं !** यह सुनकर बालक की अश्रुधारा निकल पड़ी ! नेत्र सजल हो गए ! उसने स्वामी जी को दण्डवत प्रणाम किया ! इतने बड़े महापुरुष और अपने आप को धोबी कह रहे हैं ! मेरा मान बड़ा रहे हैं ! फिर उस गरीब बालक को पुनः हृदय से लगाकर उसको धन्य-धन्य बना दिया !

ऐसे प्रेमामूर्ति सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज ने ऊँच-नीच का भेद मिटाकर सभी मे प्रभु-परमात्मा को देखकर मान-सन्मान, स्नेह प्रेम में बांध लिया !

ऐसे प्रेमावतारी महापुरुषों के 'श्री चरणों' में शत्-शत् नमन! कोटि-कोटि वन्दन.... !

प्रेम के वशीभूत महापुरुष

! ! सबते ऊँची प्रेम सगाई ! !

एक बार सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज 'श्री अमरापुर दरबार' जयपुर में विराजमान थे ! तब किसी सेवाधारी ने पूछा - महाराज जी ! आप जूस पियेंगे..? तो स्वामी जी ने कहा- कि- डॉक्टर की मना हैं ! फिर जब संत राजूराम जी ने भी पूछा - महाराज जी ! आप जूस पियेंगे..? फिर भी स्वामी जी ने इन्कार कर दिया और कहा कि- डॉक्टर ने जूस पीने से मना किया है !

इतने में ही एक प्रेमी जिसका नाम कुन्दनदास था ! वह बड़े प्रेम से गन्ने का जूस लेकर आया और कहा - महाराज जी ! मैं आपके लिए जूस लेकर आया हूँ ! इसे आप स्वीकार करें ! स्वामी जी ने तुरंत कहा - हाँ-हाँ ! जल्दी लाओ ! तब एक सेवाधारी ने कुन्दनदास से कहा - महाराज जी को आधा गिलास ही जूस दीजिए! स्वामी जी ने हाथ में गिलास लेकर कहा- आधा गिलास क्यों...? मैं पूरा गिलास पीयूँगा ! तो सेवादारी ने कहा- आपको डॉक्टर ने जूस पीने से मना किया है ! **तब स्वामी जी अपनी मौज में कहने लगे- अरे भाई !छोड़ो डॉक्टर को !**

उस समय अद्भुत प्रेम भाव छलक रहा था ! अन्तर्यामी

स्वामी जी पहले ही जान गए थे कि- एक भक्त जूस लाने वाला है ! इसलिए सबको जूस के लिए मना कर रहे थे ! उस भक्त कुन्दनदास जी के प्रेम को देखकर स्वामी जी ने अपनी तबियत को न देखकर, उसके प्रेम व सेवा को अंगीकार किया ! उस भक्त के खुशी का ठिकाना नहीं था ! उसका ह्रदय आनन्द एवं उल्लास से भर गया था ! श्री गुरु चरणों में पड़कर अपने को धन्य - धन्य मानने लगे !

ऐसे अन्तर्यामी प्रेमामूर्ति महापुरुषों के श्री चरणों में शत्-शत् नमन ! कोटि-कोटि वन्दन !

स्वामी जी की निर्भयता व समयबद्धता

सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के जीवन में भक्ति-ज्ञान-वैराग्य एवं फकीरी की झलक देखने को मिलती थी तथा फकीरों वाली बेपरवाही भी उनमें झलकती थी ! क्योंकि तपस्वी महायोगी सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जैसे मुर्शिदों ने जो जाम पिलाया था !

एक बार एक जगह किसी बाजार का उदघाटन करना था ! वहाँ मुख्यमंत्री तथा और भी कई मंत्री गण आने वाले थे !

स्वामी जी कुछ संतों व प्रेमियों के साथ समय पर पहुँच गए! वहाँ के आयोजकों ने स्वामी जी का स्वागत सत्कार किया ! स्वामी जी ने कार्यक्रम शुरू करने को कहा तो उन्होंने कहा- महाराज जी ! मुख्यमंत्री जी नहीं आए ! कुछ समय तक उस मुख्यमंत्री की प्रतीक्षा भी की ! परन्तु जब बहुत देर तक वह नहीं आए, तो फिर स्वामी जी ने विधि विधान से बाजार का उदघाटन कर दिया !

जब स्वामी जी उद्धघाटन करके जाने लगे ! तभी वहाँ मुख्यमंत्री का काफिला आ पहुँचा ! मुख्यमंत्री ने आते ही स्वामी जी को नमन किया ! देरी की लिए क्षमा मांगी ! तब **स्वामी जी ने उनके गाल पर प्रेम का तमाचा (चांटा) मारा** और कहा - काका ! कितनी देर से तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं..? कार्यक्रम पूरा हुआ ! समय से आया करो !

उस मंत्री ने स्वामी जी से कहा- महाराज जी ! मैं आपसे अकेले में मिलना चाहता हूँ ! तब स्वामी जी व सभी ने सोचा- पता नहीं ! मंत्री अकेले में क्या बोलेगा..? महापुरुष तो निड़र थे ! कोई भय-डर नहीं ! कुछ दिन बाद जब वह मंत्री अकेले में मिलने आया!

तब वह स्वामी जी के श्री चरणों में गिरकर प्रसन्नता व्यक्त करने लगा और कहने लगा - महाराज श्री ! आज आपने मेरे गाल पर प्रेम का चांटा देकर मुझे मेरा बचपन याद दिला दिया ! मेरे बचपन में जब मेरे पिताजी का प्रेम उमड़ता था तो ऐसे ही धीरे से मेरे को चांटा देते थे ! **आज फिर मैंने आपमें अपने पिता जी का प्रेम पाया है !**

स्वामी जी ने उस मंत्री को पिता वाला प्यार देकर उसे धन्य-धन्य बना दिया और कहने लगे - ष्बेटा ! समय की कद्र किया करो ! जो समय की कद्र नहीं करता तो समय भी उसकी कद्र नहीं करता ! जो कार्य करों ! उसे समय पर करो ! कार्य तो करना ही हैं, तो क्यों ना समय पर किया जाये ? वह मंत्री कहने लगा - जी महाराज श्री ! मैं आगे से ध्यान रखूँगा ! आपकी शिक्षा को सदैव याद रखूँगा और आत्मसात् करूँगा !

ऐसे ही स्वामी जी ने छोटे-बड़े सबको स्नेह व अपनापन प्रदान किया और अनेकों को सहज में बड़े-बड़े उपदेश देकर उनका कल्याण किया !

ऐसे निर्भीक प्रेमावतार सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के 'श्री चरणों' में शत्-शत्..! कोटि-कोटि वन्दन.. !

स्वामी जी की नम्रता

संत महात्माओं में अनेक गुण होते है ! उन्हीं गुणों में सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज में नम्रता का विशेष गुण था ! इतने बड़े पद पर आसीन होने के बावजूद भी अपने आप को दासन दास समझते थे ! महापुरुषों के ऐसे गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए !

स्वामी जी गुरु कृपा व नम्रता के कारण ही इतने ऊँचे पद पर पहुँच गए !

स्वामी जी का संत महात्माओं से विशेष प्रेम था ! उनके दर्शनो के लिए हमेशा लालयित रहते थे ! एक बार स्वामी जी किसी संत महापुरुष के पास मिलने व दर्शन के लिए गये ! वे महापुरुष किसी से भी मिलते नहीं थे ! तब स्वामी जी ने अपने आपको बहुत छोटा शब्द कहवाकर भेजा- एक सूरश्याम दास आपके दर्शनों के लिए आया है !

स्वामी जी की इतनी दीनता देखकर वह संत- महापुरुष अपने आपको रोक नही पाएं और स्वयं ही उठकर बाहर आ गए ! स्वामी जी से महापुरुष कहने लगे- महाराज जी ! आपने कष्ट क्यों किया ! हमें ही आदेश देकर बुला लेते ! वह महापुरुष- स्वामी जी की इतनी नम्रता देखकर बहुत प्रसन्न चित्त हुए और स्वामी जी को

हृदय से लगा लिया ! दोनों महापुरुषों का आत्मीय मिलन हुआ ! आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा हुई !

धन्य - धन्य हैं - आप के जैसे महापुरुष जो स्वयं इतने बड़े पदवी पर विराजमान होकर सभी सन्तों एवं भक्तों का मान वर्धन करते हैं !

स्वामी जी कहने लगे- हम धन्य-धन्य नहीं है ! हम तो सूरदास अपनी क्रिया भी अपने आप नहीं कर सकते थे ! यह सब तो हमारे प्यारे '**श्री गुरुदेव सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज**' और सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की कृपा का ही फल हैं ! जो मुझे इस लायक बनाया ! मैं तो उनका दास व सेवक हूँ !

धन्य-धन्य हैं- ऐसे महापुरुष ! जो अपने 'श्री गुरुदेव जी' की यश-कीर्ति को बढ़ाते है और जग में नाम उज्ज्वल करते है !

ऐसे सत्पुरुषों के 'श्री चरणों' में शत्-शत् नमन ! कोटि-कोटि वन्दन !

महापुरुषों का बड़प्पन

एक बार सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज श्री वृन्दावन धाम में विराजमान थे ! हथीन के डॉक्टर श्री धनपतराय जी स्वामी जी के पास आए और हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगे कि- हे प्रभु ! वृन्दावन से आप हरिद्वार जायेंगे, तो मार्ग में चलते, इस दास की हथीन नगरी आती हैं ! कृपया हमारी नगरी व कुटिया को पवित्र- पावन करते हुए जाइये तो हमें बड़ी खुशी होगी !

स्वामी जी ने कहा - डॉक्टर साहब ! संतों को बहुत कष्ट होगा क्योंकि दिल्ली होकर जाना हैं और उसी दिन ही हरिद्वार पहुँचना हैं ! इतना सुनकर वह प्रेमी प्रेम में विह्वल होकर रोने लगा! यह प्रेमी सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का भक्त था ! उसके मन की बहुत इच्छा थी कि स्वामी जी हथीन होकर जाएं !

स्वामी जी- उस प्रेमी से हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर कहते हैं कि डॉक्टर साहब ! आप उदास नहीं होवे ! आप बहुत पुराने हमारे सद्गुरु सर्वानन्द महाराज श्री के शिष्य हैं ! हम भी मजबूर हैं ! अब की बार माफ करो ! देखो - महापुरुषों की निर्मानता ! इतने बड़े महामंडलेश्वर कैसे क्षमा माँग रहे है ! उपदेश करना सरल होता है पर उस पर चलना बड़ा कठिन होता है, पर ये सब गुण स्वामी जी में विद्यमान थे ! फिर आगे मैं अवश्य आकर सेवा करूँगा !

इतना सुनकर धनपतराय जी और जोर से अश्रु धारा बहाने लगे और स्वामी जी के श्री चरणों में गिर पड़े और कहने लगे– महाराज जी ! आप मुझे माफ कर दीजिए ! आप तो हमारे गुरुदेव भगवान हो ! आप हमें हाथ न जोड़िए ! स्वामी जी आपको जैसी सुविधा हो ! हम अगली बार आपका हथीन नगरी में पधारने का इन्तजार करेंगे !

स्वामी जी में कितनी न निर्मानता हैं ! इतने बड़े महामण्डलेश्वर थे ! एक बार में ही मना कर देते ! तो क्या होता..? लेकिन नहीं ! स्वामी जी ने कभी किसी के हृदय को नहीं दुखाया ! सबका मान रखते थे ! खास करके जो पुराने प्रेमी **श्री गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** व **सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** में इतनी श्रद्धा भाव रखते हो या उनके शिष्य हो ! स्वामी जी – उन सबका तो विशेष आदर करते थे !

धन्य – धन्य हैं – सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज ! उनके 'श्री चरणों में' शत्–शत् नमन.. कोटि–कोटि वन्दन...!

बेपरवाह महापुरुष

संत महापुरुषों की अपनी मौज-मस्ती व बेपरवाही होती है ! भक्ति का अनोखा आलम ! ऐसे ही एक बार सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज '**श्री अमरापुर स्थान**' जयपुर में अपने कक्ष में विराजमान थे ! स्वामी जी वहीं पलंग पर अपनी फकीरी वाली मौज में मात्र धोती और बनियान पहने हुए थे !

तभी किसी संत- सेवादारी ने स्वामी जी से आकर कहा- हे प्रभु ! मंत्री जी आए हैं और आपके दर्शन करना चाहते हैं ! स्वामी जी ने कहा- भले ही उन्हें अन्दर लेकर आओं ! तब वह सेवादारी कहने लगा - स्वामी जी ! मैं आपका कुर्ता (कपड़े) ले आऊँ..? स्वामी जी ने मना कर दिया ! वह सेवादारी पुनः कहने लगा- मंत्री जी आ रहे हैं.. ? स्वामी जी ने उत्तर दिया- भले ही मंत्री जी आये ! हम संत फकीरों का क्या ? ऐसे होते हैं फक्कड़ संत- महापुरुष ! फकीर की अपनी बंदगी होती है ! **राजा की फौज - फकीर की मौज !**

ऐसी बेपरवाही में विचरण करने वाले संत महापुरुषों को शत्-शत् नमन ! कोटि-कोटि वन्दन !

भगवान श्री झूलेलाल के प्रति निष्ठा

सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज अपने सत्संग में 'भगवान श्री झूलेलाल' को बहुत ही महत्त्व देते थे ! स्वामी जी कहते थे कि- पूरी सिंधी जाति भगवान श्री झूलेलाल के नाम पर ही एक जुट हो सकती हैं ! सिंध के नसरपुर में अवतार लेकर हिन्दू धर्म की रक्षा की थी ! अधर्म मिटाकर धर्म को पुनः स्थापित किया ! भगवान श्री झूलेलाल जिन्दह पीर (जीते जागते अवतार व भगवान) हैं !

स्वामी जी कहते थे- झूलेलाल भगवान आज भी सभी के मनोरथ सिद्ध करते हैं ! हमारा पक्का विश्वास व श्रद्धा होनी चाहिए ! महाराज जी अपने नाना जी की बात सत्संग में बताते थे कि उनको संतान नहीं होती थी ! लेकिन स्वामी जी के नाना प्याऊ पर मटके भरकर रखते थे और झूलेलाल भगवान के परम भक्त थे ! संतान न होने के कारण परिवार के लोग दुःख महसूस करते थे और कहते थे कि- हम किसी मुसलमान फकीर के पास ले चलेंगे ! नाना जी कहते थे- ना- ना ! झूलेलाल भगवान सब भला करेंगे ! उन्हें भगवान श्री झूलेलाल पर विश्वास था ! उन्हीं के द्वारा सन्तान सुख प्राप्त होगा ! आज कोई पर्व का दिन था ! स्वामी जी के नाना झूलेलाल भगवान को प्रार्थना करने लगे कि- प्रभु जी ! मेरे धर्म की

मेरी लाज बचाओ ! नहीं तो मेरे घर वाले मुझे बहुत तंग करके मुसलमान फकीर के पास ले जाएंगे ! आपके होते हुए - मैं किसी दूसरे पीर पैगम्बर के पास नही जाना चाहता ! आप ही मेरी रक्षा करो !

तभी देखते ही देखते एक विलक्षण लीला हुई ! जिस कुँए के पास जल की सेवा करते थे ! वहाँ से एक संग (मिश्री का ढ़ेला) आकर के नानाजी की गोद में घिरा ! चारों ओर जय झूलेलाल- जय झूलेलाल की आवाज गूंजने लगी ! यह देखकर सभी बड़े प्रसन्न हुए! उन्होंने वह मिश्री का ढ़ेला अपनी पत्नी को खिलाया और स्वयं भी खाया ! समय पाकर ठीक १० माह के बाद उनको संतान सुख की प्राप्ति हुई ! यह भगवान की लीला देखकर सभी बड़े प्रसन्नचित्त हुये! इसलिए हमे अपने धर्म व जाति में विश्वास रखना चाहिए ! हमारे **सिंधी समाज के इष्टदेव भगवान झूलेलाल जी** है ! उनके प्रति श्रद्धा भाव रखना चाहिए- जिससे सर्व मनोरथ सिद्ध हो जाते है !

सतगुरु टेऊँराम जी महाराज ने भी भगवान झूलेलाल जी स्तुति की है :-

सचनि जो दूलहु दरियाह शाह, आहे राजा रांवल राय ।

जाहिर पींर जमीन तें, मुहिंजों मालिक बेपरवाह ।।

स्वामी जी का संदेश हैं कि सभी भगवान झूलेलाल की शिक्षाओं को

हृदय में धारण करों ! झूलेलाल भगवान ने सनातन हिन्दू धर्म की रक्षा जनेऊ और चोटी की लाज बचाने के लिए अवतार धारण किया था ! आज हम उस संदेश को भूल गए हैं ! हमें अपने हिन्दू धर्म के लिए बलिदान करना पड़े तो भी हम पीछे न हटे!

धर्म अपने माहिं हरदम, प्यार कर नटना नहीं ।

शीश जावें जान दे, पर धर्म से हटना नहीं ।।

स्वामी जी सभी कार्यक्रमों को एक तरफ करके सिंधी समाज का मुख्य पर्व **''चेटी चंड महोत्सव''** बड़े भक्ति भाव के साथ सिंधी समुदाय के साथ मनाते थे !

ऐसे थे हिंदू सनातन धर्म के रक्षक भगवान श्री झूलेलाल जी एवं सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम् उपासक स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज...

गुरु दिवस शनिवार की महिमा

एक समय गुरुभक्त सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज जयपुर श्री अमरापुर दरबार में विराजमान थे ! उस दिन **गुरु जन्मदिवस शनिवार** का पावन दिन था ! स्वामी जी सत्संग के करते हुए अपनी मौज में आ गए और '**श्री गुरुदेव जी**' की महिमा का व्यख्यान करते हुए श्री मुख से कहा- आज के दिन इस धरा पर '**मंगलमूर्ति आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज**' अवतार लेकर आये थे ! उन्होंने जीवों को भरपूर अमृत रस का पान कराया और अपने आत्म स्वरूप में स्थित करवाया ! जो भक्ति के अधिकारी थे- उनको भक्ति प्रदान की ! जो निष्काम कर्म करते थे- उनको निष्काम कर्म के माध्यम से परम पद पर पहुँचाया और जो बिलकुल पतित थे ! जिनका जीवन पशुतुल्य था - उनको मानवता का पाठ पढ़ाया ! जो आसुरी प्रवृत्ति के थे - उनमें दया भाव का संचार किया औरों की तो बात छोड़ो ! सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज (भगवान) ने शनिवार के दिन अवतार लेकर शनिग्रह को यह वरदान दिया कि- आप हमारे भक्तों के लिए अनुकूल हो जायें ! कभी भी किसी भी प्रकार की कोई पीड़ा ना देना ! सबका मंगल ही मंगल करना !

जो भी भक्त सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की

चरण-शरण में रहेगा ! प्रत्येक शनिवार को श्री गुरु दरबार पर जाएगा ! उसको शनि ग्रह तो क्या ! कोई भी ग्रह या बड़ी से बड़ी आपदाएँ भी कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी ! गुरु दिवस शुभ शनिवार हम सब प्रेम प्रकाशियों के लिए यह वरदान हैं !

शनिवार की महिमा न्यारी, जग में आप पधारे !
तेरी तपस्या के बल से हुए, शनि के बारे न्यारे !
जो भी शनिवार को आवे, गुरु चरणों मे शीश झुकावे !
उसकी मंशा पूरी करते- बाबा टेऊँराम !!

जो भी प्रेमी - भक्त गुरु दिवस शनिवार को गुरु दरबार आएगा ! श्री गुरु भगवान उसकी सब मनोकामनाएं अवश्य पूरी कर देंगे !

ऐसे थे- महायोगी विघ्नहर्ता सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम भक्त स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज..!

शत शत नमन....! कोटि कोटि वन्दन...!

संकलन / संपादक

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)